R.K.
GROUP OF COLLEGE

Behind Kalwar Police Station, Kalwar, Jaipur (Raj.)

ASSIGNMENT

R.K. VIGYAN P.G. MAHAVIDHYALAYA

Affiliated to University of Rajasthan, Approved by Govt. of Raj.)

Kalwar Road, Kalwar, Jaipur (Raj.)

Website : rkgroupofcollege.com , Mob. No. : 9314501146

E-mail : hrshreebalajieducationsamiti@gmail.com

B.A. / B.Sc. / B.Com.

ASSIGNMENT WORK / MIDTERM TEST

Session 20 24 - 20 25

Semester II nd E.A.F.M.

Name of Student Rinku Kumawat Father's Name Mr. Bhanwar lal.

Roll No. .... Enrollment No. ....

Year 2024 - 25 .... Semester II nd Semester ....

FLP - 2

Ques 1. साख सृजन से आप क्या समझते हैं साख सृजन की सीमाएँ एवं महत्व को समझाइए ?

Ques 2. भारतीय वित्तीय प्रणाली के प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए ?

Ques 3. आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका को विस्तार से समझाइए ?

Ques 1. साख सृजन से आप क्या समझते हैं साख सृजन की सीमाएँ एवं महत्व को समझाइए?

Ans **साख सृजन का अर्थ :-** वाणिज्यिक बैंकों द्वारा अपने नकद कोष को कई गुना करने के लिए माँग जमा राशि में वृद्धि करने के लिए अपनाए गए इस दृष्टिकोण को साख सृजन कहा जाता है।

* **साख सृजन की सीमाएँ :-** साख सृजन की सीमाएँ एक चार्ट द्वारा प्रदर्शित की गई हैं:-

साख सृजन की सीमाएँ

→ (1) नकदी की मात्रा।
→ (2) नकद कोष अनुपात।
→ (3) बैंकिंग आदतों का विकास।
→ (4) साख सृजन में चोरी।
→ (5) बैंकों में जमा करने की ग्राहक की इच्छा।
→ (6) अतिरिक्त कोष।

साख सृजन की सीमाओं का वर्णन :- साख सृजन की सीमाओं का वर्णन नीचे निम्न प्रकार से किया जा रहा है :-

(1) नकदी की मात्रा :- बैंकों द्वारा प्राप्त नकदी साख सृजन क्षमता निर्धारित करती है। नकदी की प्राप्ति जितना अधिक होगा, साख सृजन भी उतना ही अधिक होगा। नकदी कम प्राप्त होने के परिणामस्वरूप साख सृजन भी कम होता है।

(2) नकद कोष अनुपात :- सम्पूर्ण जमा राशि का उपयोग साख सृजित करने के लिए नहीं किया जा सकता है। बैंक द्वारा नकद कोष के रूप में कुछ निश्चित राशि रखना अनिवार्य होता है।

(3) बैंकिंग आदतों का विकास :- जब किसी ग्राहक को ऋण प्रदान किया जाता है उस स्थिति में प्राथमिक जमा का होना महत्वपूर्ण होता है। यह एकाधिक विस्तार के लिए एकमात्र शर्त है।

(4) साख सृजन में चोरी :- साख निर्माण की प्रक्रिया में चोरी हो सकती है। बैंकों के मध्य कोष एक सहज प्रवाह सम्भव नहीं होता है। कुछ व्यक्तियों द्वारा नकद कोष रखते समय निष्क्रिय नकदी का निर्माण किया जा सकता है।

(5) बैंकों में जमा करने की ग्राहक की इच्छा :- बैंकों में राशि जमा करने के लिए जमाकर्ताओं की प्राथमिकता बैंकों की साख सृजन क्षमता को प्रभावित करती है। यदि बैंकों में धनराशि जमा नहीं की जाती है तो साख निर्माण भी नहीं किया जा सकता है।

(6) अतिरिक्त कोष :- जब अर्थव्यवस्था व्यापारिक मंदी की स्थिति से गुजरती है उस स्थिति में अतिरिक्त कोष रखा जा सकता है। ऐसी स्थिति में बैंक ऋण प्रदान करने की अपेक्षा अधिक कोष रखने का निर्णय ले सकते हैं। इस प्रकार उच्च नकदी भंडार के कारण इन स्थितियों में साख सृजन की राशि कम होगी।

* साख सृजन का महत्व :- साख सृजन का महत्व निम्न प्रकार है :-

(1) अर्थव्यवस्था में उच्च मुद्रा पूर्ति साख सृजन द्वारा सृजित की जाती है।

(2) किसी भी अर्थव्यवस्था में उपलब्ध मुद्रा लेन-देन को पूरा करने तथा विभिन्न आर्थिक प्रक्रियाओं जैसे विनिर्माण, वितरण तथा उपभोग को सक्षम करने की सुविधा प्रदान करती है।

(3) प्राथमिक जमा वह जमा होती है, जो मुद्रा आवंटन या उसके अनुरूप होने के परिणामस्वरूप होती है।

(4) जब बैंक प्राथमिक जमा राशि लेते है, तो उनकी निष्क्रिय भूमिका होती है।

(5) इसकी सीमा निर्धारित करते समय ग्राहक का निर्णय सक्रिय भूमिका निभाता है।

(6) जब बैंकिंग प्रणाली व्युत्पन्न जमा का सृजन करती है तो समुदाय के पास मुद्रा के कुल संचय में वृद्धि होती है।

(7) किसी भी वाणिज्यिक बैंक ~~का~~ के सबसे महत्वपूर्ण कार्य जमा प्राप्त करना एवं सीमित अवधि के लिए मांग किए जाने पर प्रदान करना है।

(8) जब प्रतिभूतियों या विभिन्न अन्य प्रकार की सम्पत्तियों को बैंकों द्वारा जनता से क्रय किया जाता है तो इसके परिणामस्वरूप सक्रिय जमाएँ सृजित होती हैं।

Ques 2. भारतीय वित्तीय प्रणाली के प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए?

Ans भारतीय वित्तीय प्रणाली :-

भारतीय वित्तीय प्रणाली के चार अनुभाग या घटक है। ये वित्तीय संस्थान, वित्तीय बाजार, वित्तीय साधन एवं वित्तीय सेवाएँ है।

भारतीय वित्तीय प्रणाली के घटक

- (1) वित्तीय बाजार
  - (i) संगठित
    - (A) पूंजी बाजार
    - (B) मुद्रा बाजार
  - (iii) असंगठित
- (2) वित्तीय संस्थान
  - (i) विनियामक
  - (ii) मध्यवर्ती
  - (iii) गैर-मध्यवर्ती
- (3) वित्तीय साधन
  - (i) प्राथमिक
  - (ii) द्वितीयक
- (4) वित्तीय सेवाएँ
  - (i) निधि-आधारित वित्तीय सेवाएँ
  - (ii) शुल्क-आधारित वित्तीय सेवाएँ

भारतीय वित्तीय प्रणाली के घटकों का वर्णन:- भारतीय वित्तीय प्रणाली के घटकों का वर्णन नीचे निम्न प्रकार से किया जा रहा है:

(1) वित्तीय बाजार:- ऐसा कोई भौतिक या भौगोलिक स्थिति उपस्थित नहीं होता है जिसे वित्तीय बाजार कहा जा सकता है परन्तु सभी वित्तीय लेनदेन वित्तीय बाजार में घटित होने वाले माने जाते हैं। अतः वित्तीय बाजार भी व्यापक होते हैं।

(2) वित्तीय संस्थान:- विभिन्न प्रकार के संगठन जो व्यक्तिगत एवं निगमित स्तर पर वित्तीय लेनदेन में मध्यस्थ तथा सुविधाकर्ता के रूप में कार्य करते हैं, उन्हें वित्तीय संस्थान शब्द में शामिल किया गया है।

(3) वित्तीय सम्पत्ति एवं साधन:- एक वित्तीय साधन एक व्यक्ति के लिए एक अभिस्वीकृत होती है, जो किसी अन्य व्यक्ति या संस्था से प्राप्त होने वाले दावे के विरुद्ध उसका

अधिकार प्रदान करता है, जबकि वह व्यक्ति ब्याज या लाभांश को नियमित रूप से प्राप्त करते हैं।

भारतीय वित्तीय साधनों एवं सम्पत्तियों के तीन प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं:-

(i) मुद्रा बाजार साधन :- यह एक वर्ष या उससे कम की मूल परिपक्वता के साथ अल्पकालिक उधार लेने, उधार देने, क्रय एवं विक्रय करने में शामिल 'सम्पत्तियों' के लिए 'वित्तीय' बाजार का एक घटक है।

(ii) पूंजी बाजार साधन :- पूंजी बाजार साधन ऋण या समता के रूप में दीर्घकालिक वित्तीय साधन होते हैं जिनका व्यापार या तो प्रतिभूति विनिमय पर, या प्रत्यक्ष रूप से निवेशकों तथा उधारकर्ताओं के मध्य होता है।

(iii) व्युत्पन्न :- एक व्युत्पन्न साधन एक वित्तीय साधन है, जो अंतर्निहित परिसम्पत्ति से अपना मूल्य प्राप्त करता है।

(4) विलीय सेवाएँ :- महत्वपूर्ण वित्तीय सेवाएँ जैसे लीजिंग, साख दर, किराया क्रय, व्यापारिक बैंकिंग आदि एक वित्तीय मध्यस्थों द्वारा प्रदान की जाती है। वित्तीय सेवाओं को आगे दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है :-

(i) निधि-आधारित वित्तीय सेवाएँ :- संपत्ति आधारित वित्त को विभिन्न निगमित संपत्ति के प्रति निधि-करण कहा जाता है जिसमें प्राप्य खाते, रहतिया, संयंत्र एवं मशीनरी, रियल एस्टेट तथा कभी-कभी बौद्धिक संपदा एवं ब्रांड भी शामिल होते है। यह किसी सम्पत्ति द्वारा सुरक्षित ऋण बनाने की विधि है। इसमें निम्नलिखित शामिल है :-

(A) संरूपण :- संरूपण विदेशी व्यापार के दौरान प्राप्त होने वाली राशियों के वित्तपोषण का एक रूप है।

(B) किराया क्रय :- यह एक निश्चित अवधि के

लिए एक सम्पत्ति को किराए पर लेने तथा उस अवधि की समाप्ति के पश्चात् उसी सम्पत्ति के अधिग्रहण को संदर्भित करता है।

(c) छूट - बिल :- यह एक अल्पकालिक मुद्रा बाजार साधन को दर्शाता है तथा साथ ही व्यापार से संबंधित लेनदेन के वित्तपोषण में सहायता करता है।

(ii) शुल्क - आधारित वित्तीय सेवाएँ :- शुल्क - आधारित वित्तीय सेवाएँ प्रारम्भ में निधि का निर्माण नहीं करती है, बल्कि यह सुनिश्चित करती है कि निधि का सृजन उनकी सेवाओं के माध्यम से किया जाए जिसके लिए उनके द्वारा शुल्क लिया जाता है। इसमें निम्न शामिल है :-

(A) व्यापारिक बैंक :- यह एक संस्था या एक व्यक्ति हो सकता है जो निगम एवं नगर पालिकाओं के लिए प्रतिभूतियाँ जारी करने वाले एक एजेंट हो सकते है।

(B) साख दर :- यह मूल्यांकन किए जा रहे विभिन्न साधनों के लिए विशिष्ट संदर्भ वाले प्रतीकों को आवंटित करने की प्रक्रिया है।

(C) बैंक गारंटी :- यह ग्राहक तथा निर्गमनकर्ता बैंक के मध्य का अनुबंध है जहाँ बैंक ग्राहक के लिए ग्राहक के दावों को निपटाने का उत्तरदायित्व लेती है जिसके लिए गारंटी प्रदान की गई थी।

Ques 3. आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका को विस्तार से समझाइए ?

Ans आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका :- बैंक किसी देश की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इस संबंध में उनके योगदान को संक्षेप में निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है :-

(1) विदेशी मुद्रा ऋण।
(2) संतुलित विकास।
(3) कृषि क्षेत्र को वित्तीय सहायता।
(4) सरकारी व्यय।
(5) नए उद्यमियों को बढ़ावा देना।
(6) मौद्रिक नीति को लागू करने में सहायक।

आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका का वर्णन :- आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका का वर्णन नीचे निम्न प्रकार से किया जा रहा है :-

(1) विदेशी मुद्रा ऋण :- बैंक नई परियोजनाओं की स्थापना के साथ-साथ उपस्थित व्यवसायों

के विस्तार, विविधीकरण, नवीनीकरण तथा आधुनिकीकरण के लिए विदेशी मुद्रा व्यवसाय में लगे उद्योगों को विदेशी मुद्रा ऋण भी प्रदान करते है।

(2) संतुलित विकास :- पूरे देश में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करायी जा चुकी है। कुछ बैंकों ने तो आगे बढ़कर विदेशों में भी विदेशी शाखाएँ खोली है, जैसे - SBI, BOB, P.N.B, आदि।

(3) कृषि क्षेत्र को वित्तीय सहायता :- भारत विकासशील देशों में से एक है, जिसकी अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। बैंक विभिन्न विधियों से कृषि क्षेत्र के विकास को सुगम बनाते है।

(4) सरकारी व्यय :- सरकारी प्रतिभूति बाजार में वाणिज्यिक बैंक प्रमुख प्रतिभागियों में से एक है।

(5) नए उद्यमियों को बढ़ावा देना :- विकासित बैंकों

ने उद्योगपतियों के एक अलग वर्ग के विकास एवं औद्योगीकरण की संस्कृति का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(6) मौद्रिक नीति को लागू करने में सहायक :- किसी देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा तैयार की गई मौद्रिक नीति का प्रसारण वाणिज्यिक बैंकों के सहयोग से ही संभव होता है।

R.K.
GROUP OF COLLEGE

Behind Kalwar Police Station, Kalwar, Jaipur (Raj.)